IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय नेपाली बाल-साहित्य

(एक अनुसंधान)

डॉ. गोमा देवी शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय

शोध सार

बाल साहित्य, साहित्य का वह क्षेत्र है जिसमें बालोपयोगी साहित्य की रचना की जाती है। इस प्रकार के साहित्य की रचना आदिम काल से ही मानव समाज में होती आ रही है। लिपि चिह्नों के विकास से पहले यह मौखिक परंपरा के रूप में समाज में विद्यमान था। इसके विकास के बाद यह लिपिबद्ध रूप में प्राप्त होता है। हर समाज में समय अनुकूल बच्चों को शिक्षित करने की मौखिक परंपरा रही है। यही परंपरा आज लिपिबद्ध बाल साहित्य के रूप में प्राप्त होता है। भारत में लंबे समय तक बाल साहित्य स्कूली पाठ्क्रम के लिए निर्मित होता रहा। साहित्य अकादमी द्वारा इसे पुरस्कार के दायरे में लाने के बाद व्यापक रूप में कलमकारों का ध्यान इसकी स्वतंत्र रचना की ओर जाता दिखाई देता है। आज संविधान से स्वीकृत एवं इतर भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य की रचना हो रही है। भारतीय नेपाली साहित्य में भी वर्तमान में बाल साहित्य का विपूल भंडार तैयार हो चुका है। कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास जैसी विधाएँ भारतीय बाल साहित्य में उपलब्ध हैं। इसके साथ-साथ कई बाल पत्रिकाएँ भी प्राकशित हो रही हैं। आज ऐसी कई रचनाओं को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

कुञ्जी शब्द - बाल, किशोर-किशोरी, बालोपयोगी, मनोविज्ञान, परीकथाएँ, नीतिकथाएँ, संस्कार, शिल्पकला, प्रेरणाप्रद, नैतिक, शिक्षामूलक।

प्रस्तावना :

बाल-साहित्य 'बाल' और 'साहित्य' दो शब्दों से निर्मित है। बालोपयोगी साहित्य को बाल-साहित्य के नाम से जाना जाता है। 13 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों के जीवन संबंधी विभिन्न अवस्थाओं के आधार पर रचित साहित्य को क्रमशः शिशु साहित्य या बाल साहित्य और किशोर साहित्य के नाम से जाना जाता है। लेकिन समग्र में सभी स्तर के साहित्य को बाल साहित्य के नाम से अभिहित किया जाता है। समग्र मे बच्चों की इसी आयु सीमा के अनुसार सृजित साहित्य बाल साहित्य के दायरे में आता है। बच्चों की मानसिक स्तर के अनुसार बाल साहित्य में समाज, संस्कृति, देश और दुनिया का परिचय, नैतिक उपदेश, उनकी कोमल प्रकृति, स्वभाव, मनोविज्ञान, उनका संसार, समस्या, जिज्ञासा, परिवर्तन, सीखने का क्रम जैसे तत्वों से युक्त कविता, कहानी, निबंध, गीत, नाटक, सचित्र कहानी आदि विषय बाल साहित्य के अंतर्गत आते हैं।

बाल साहित्य : भारतीय अवधारणा

बाल साहित्य लेखन की शुरुआत का श्रेय पश्चिमी दुनिया को दिया जाता है, लेकिन सच्चे अर्थों में कहा जाए तो बाल साहित्य की शुरुआत भारत में हुई है। इसके उदाहरण के तौर पर हम पंचतंत्र की कहानियों को ले सकते हैं। महामहोपाध्याय पं. सदाशिव शास्त्री के अनुसार इन कथाओं की रचना 300 ई.पू. पंडित विष्णु शर्मा ने की थी। इन कहानियों के जरिए उन्होंने एक राजा के तीन बिगड़ैल बेटों को सही राह दिखाई थी। उनकी शिक्षा समाप्त होने के बाद पंडित विष्णु शर्मा ने इन कहानियों को **पंचतंत्र की कहानियाँ** के रूप में संकलित किया। विद्वानों के अनुसार 300 ई.पू से 400 ई.पू. के बीच लिखित जातक कथाओं को दूसरे उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है। पश्चिमी जगत में देखा जाए तो सत्रहवीं सदी से बाल साहित्य का आरंभ होने के तथ्य प्राप्त होते हैं। समग्र नेपाली साहित्य में औपचारिक बाल साहित्य लेखन का प्रारंभ सन् 1901 में जयपृथ्वी बहादुर लिखित **अक्षरांकन शिक्षा** से मानी जाती है। इस पुस्तक में संकलित बालोपयोगी ललित कविताएँ आरंभिक नेपाली बाल साहित्य के नमूने के रूप में प्राप्त होती हैं।

भारतीय नेपाली बाल साहित्य लेखन परंपरा

अब तक के अनुसंधान से प्राप्त तथ्य के अनुसार भारतीय नेपाली बाल साहित्य लेखन सन् 1900 के आस-पास प्रारंभ हुआ। दार्जीलिङ में मिशनरी स्कूल खोले जाने के बाद औपचारिक बच्चों की शिक्षा की शुरुआत हुई थी। विद्यार्थियों की आवश्यकता को देखते हुआ पारसमणि प्रधान ने इस दिशा में पहला कदम बढ़ाया और स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए नेपाली साहित्य कथा (भाग 1,2), नेपाली सजिलो साहित्य (भाग 1-4), नेपाली साहित्य भारती (भाग 1-6), नेपाली साहित्य शिक्षा (भाग 1-3), नेपाली साहित्य परिचय (भाग 1-2), जपमाला आदि पुस्तकें लिखीं। मिशनरी स्कूल के लिए गंगाप्रसाद प्रधान ने भी कई स्वरचित एवं अंग्रेजी से अनूदित बालोपयोगी पाठ्य-सामग्री का निर्माण किया था। **मीठो गीत गाउने चराको विषयमा** (1912), **मान्छे माछाको कथाहा** (1923), **एक बतौरे साथी** (1916), **सुनौलो कथाको पुस्तक** उनके द्वारा निर्मित बाल साहित्य की पुस्तकें हैं।

प्रमुख भारतीय नेपाली बाल-साहित्यकार

1. ध्रुव दवाडी

ध्रुव दवाडी का जन्म सन् 1918 में हुआ था। उन्होंने दार्जीलिङ से अपनी साहित्यिक यात्रा प्रारंभ की थी। स्वच्छंदतावादी काव्य प्रवृत्ति के वाहक ध्रुव की कविताएँ अपने समय में अत्यंत चर्चित रहीं। उनकी अनेक कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी हुई हैं। उनके ज्वाला भाग 1 तथा भाग 2 कविता संग्रह सन् 1949-50 में प्रकाशित हुए। ध्रुव दवाडी की **बाल विनोद** (बाल कविता संग्रह, 1957) और **बाल कथा** (1957) शीर्षक से दो बाल रचनाएँ प्रकाशित हैं।

2. भोटु प्रधान

भोटु प्रधान का जन्म सन् 1934 में दार्जीलिङ में हुआ। वे सेंट जोसेफ कॉलेज, दार्जीलिङ के कला-शिक्षक के पद से सेवा निवृत्त हुए। उन्होंने वन्स अपन टाइमर पिक्टोरियल डिक्शनरी नामक सचित्र अंग्रेजी कोश निर्मित किया है। यह बालकों के हित में कला का प्रयोग है।

कुनै एक समयमा (बालकथा संग्रह,1983), **हाम्रा बाल कविता** (कविता संग्रह, 2001) उनके द्वारा रचित बाल साहित्य है। ललित कला एवं शिल्प कला के विकास में योगदान के लिए उन्हें सन् 1984 में भानुपुरस्कार,

चम्पादेवी पुरस्कार, एन.डी. सेली स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। सन् 2001 में उन्हें हाम्रा बाल कविता संकलन के लिए बाल साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

3. खिरोदा खडका

खिरोदा खडका का जन्म 19 जुलाई 1937 को दार्जीलिङ में हुआ था। उनके माता-पिता ललितादेवी और परमानंद छेत्री थे। आई.ए के साथ हिंदी विशारद उत्तीर्ण खिरोदा खडका लंबे समय तक नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिङ, शिवकुमार राई स्मृति अकादमी खरसाङ जैसी साहित्यिक संस्थाओं में विभिन्न पदों रहीं। उनका निधन 15 अगस्त 2003 को हुआ।

बाल साहित्य : **अमर आदर्श जीवनी** (भाग 1,2,3), **बाल कुसुम** (कविता संकलन), **बाल बाटिका** (कविता संकलन)।

खिरोदा खडका ने **बाल बघैंचा** नामक बाल पत्रिका का संपादन एवं प्रकाशन भी किया था। इस पत्रिका में बालोपयोगी ज्ञानवर्धक सामग्री के साथ-साथ बच्चों के द्वारा रचित रचनाओं को स्थान दिया जाता था।

4. शिशुपाल शर्मा

शिशुपाल शर्मा का जन्म सन् 1945 में सुबेदार बस्ती, खरसाङ में हुआ। घर में साहित्यिक माहौल होने के कारण वे भी सहित्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए। उन्होंने बाल साहित्य को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

बाल साहित्य : **कविता कोशेली** (कविता सं. 2006), **फक्रँदै छन् कोपिलाहरू** (कविता सं. 2006), **धनराज तामाङ** (लघु बाल उपन्यास, 2012), **प्रतिशोध** (बंगला भाषा से अनूदित बाल उपन्यास, 2013)।

शिशुपाल शर्मा संपूर्ण रूप से बाल साहित्य को समर्पित लेखक हैं। उनके योगदान की कद्र करते हुए साहित्य अकादमी ने उनके बाल कविता संग्रह कविता कोशेली को सन् 2012 में बाल साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया।

5. खुमान सोनार

खुमान सोनार का जन्म सन् 1945 में डिग्बोई, असम में हुआ था। उनकी माता बब्लुपा देवी तथा पिता नौका सोनार थे। स्नातक तक की शिक्षा प्राप्त खुमान सोनार कई साहित्यिक संस्थाओं से जुड़े। वे एक कुशल चित्रकार भी हैं। **धानचराको गुँड** (2013) उनकी प्रकाशित रचना है। इस काव्य संकलन में विविध विषय पर आधारित लघु कविताएँ संकलित हैं। प्रकृति रक्षा, नैतिक शिक्षा, फूलों की सुंदरता, ऋतु वर्णन, मानवेतर वस्तुओं का मानवीकरण, सरल, सहज अभिव्यक्ति, सरल भाषा एवं तथा तुकांतता आदि इन कविताओं में प्राप्त विशेषताएँ हैं।

6. मुन्नी सापकोटा

मुन्नी सापकोटा का जन्म 25 नवंबर 1950 को गुवाहाटी, असम में हुआ। वे अखिल भारतीय नेपाली भाषा समिति मालीगाँठ की सदस्या और देवकोटा नगर, नेपाली मंदिर समिति की संस्थापक अध्यक्षा हैं। उन्होंने इस संस्था की बाल पत्रिका **फूलवारी** तथा **नारी** का संपादन किया। उन्होंने बाल साहित्य के अलावा अनुवाद भी किया है। वे असम सरकार की ओर से कीर्ति शिक्षक पुरस्कार तथा भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित की गईं।

बाल साहित्य : **कथा फुलबारी** (2001), **बल्ल बुद्धि पलायो** (2001), **जूनकीरी** (2012) बाल कथा संग्रह। **शिशु उद्यान** (कविता संकलन, 2019), **जिङ्गोबाजेका आँसु** (अनूदित बालकथा संकलन, 2016)।

सापकोटा की बाल कहानियाँ सहज, सुबोध तथा बालोचित व्यवहार के अनुरूप हैं। ये सचित्र होने के कारण बच्चों के लिए आकर्षक हैं। कहानियों में मानवेतर पात्रों के समायोजन से ये और भी रोचक बन पड़े हैं। **जूनकीरी** कथा संग्रह के लिए मुन्नी सापकोटा को सन् 2014 में साहित्य अकादमी ने बाल साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया।

7. स्नेहलता राई

स्नेहलता राई का जन्म तकभर चायबागान, दार्जीलिङ में सन् 1950 में हुआ। उनकी माता का नाम शारदा नेचाल तथा पिता रोबीन नेचाल हैं। वे निजी जीवन में पिप्ली प्राथमिक पाठशाला, दार्जीलिङ की प्रधानाध्यापिका रहीं। अध्यापिका बनने के बाद वे साहित्य रचना की ओर उन्मुख हुईं। उनके **मनसँग साठती मार्दै** (कविता संग्रह, 2008) और **विचयन** (लेख संग्रह, 2008) प्रौढ़ रचनाएँ प्रकाशित हैं।

बाल एवं किशोर साहित्य : **मनका हरफहरू** (कविता संकलन, 2007), **बाल सुमन** (कविता संकलन, 2007), **बालोद्यान** (कविता संकलन, 2009), **स्नोहोद्गार** (कथा संग्रह, 2009), **मेरो प्यारो गाँठ** (बाल कविता संकलन, 2009,2011), **प्रकृति र पृथ्वी** (कविता संकलन भाग 1, 2, 2010), **मनु** (किशोर उपन्यास, 2013), **प्रकृतिको प्रिय घर** (किशोर कथा संग्रह, 2013)।

स्नेहलता राई की रचनाओं में सरल भाषा-शैली, तुकांतता, सरल वाक्य, नैतिक उपदेश, सचित्र अभिव्यक्ति जैसी विशेषताएँ पाईं जाती हैं। बाल साहित्य में योगदान के लिए स्नेहलता राई को नेपाल से बाल साहित्य पुरस्कार, दार्जीलङ से जीवनकालीन उपलब्धि पुरस्कार तथा बाल कविता संकलन **बाल सुमन** के लिए सन् 2011 का बाल साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

8. मुक्तिप्रसाद उपाध्याय

बाल साहित्यकार के रूप में ख्याति हासिल करने वाले मुक्तिप्रसाद उपाध्याय का जन्म पद्मादेवी उपाध्याय बराल एवं टिकाराम उपाध्याय बराल के पुत्र के रूप में 1 जनवरी 1955 को उत्तर शरणीया, गुवाहाटी में हुआ। नेपाली साहित्य में एम.ए., बी.एड. तक शिक्षा प्राप्त करके उन्होंने कृष्णमाया मेमोरियल नेपाली हाईस्कूल, सिलगढ़ी में शिक्षण कार्य किया। मुक्तिप्रसाद ने विविध विधाओं में रचनारत रहते हुए भारतीय नेपाली बाल साहित्य के विकास में भी महत योगदान किया। बाल साहित्य के अलावा उनके कई नाटक, निबंध, यात्रा साहित्य प्रकाशित हैं।

बाल साहित्य : **हिमाली** (बाल विज्ञान उपन्यास, 2006), **मालती** (बाल विज्ञान उपन्यास, 2011), **रहर** (बाल एकांकी संग्रह, 2015), **आमा छोरा** (बाल उपन्यास, 2016), **धनबहादुरको सोच** (बालकथा, 2016)।

मुक्तिप्रसाद उपाध्याय ने विज्ञान साहित्य के विकास में योगदान दिया है। उन्होंने बाल साहित्य को विज्ञान के साथ जोड़ने का काम किया है। उन्हें **मालती** बाल उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार (2015) प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें साहित्यिक योगदान के लिए हरिभक्त कटुवाल स्मृति पुरस्कार, चिल्ड्रेन लिटरेचर फाउण्डेशन द्वारा सम्मान तथा नेपाल-बांग्लादेश फ्रेन्डशिप सेरेमनि इंटरनेशनल एवार्ड प्राप्त हुए।

9. भीम प्रधान

भीम प्रधान का जन्म सन् 1958 में दार्जीलिङ में हुआ था। उनकी माता का नाम रनमाया प्रधान और पिता भक्तनारायण प्रधान थे। उन्होंने कई साल तक हिमगिरी साप्ताहिक के सह-संपादक का कार्य किया। इसके उपरांत उन्होंने अपने संपादन में स्कूली विद्यार्थियों के लिए सन् 2000 से बाल दर्पण नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित की।

बाल साहित्य : **बाल कोसेली** -1 (बाल कविता संकलन, 2011), **बाल कोसेली**- 2 (बाल कथा संकलन, 2012), **बाल कोसेली**- 3 (बाल कथा संकलन, 2013)।

भीम प्रधान की बाल कहानियों में निर्जीव, सजीव, मानव, मानवेत्तर, पशु-पक्षी आदि पात्रों का सुंदर सृजन देखने को मिलता है। इनमें सामान्य बच्चे ही पात्र न होकर दिव्यांगों को भी स्थान दिया गया है। मेरी लाटी साथी (मेरी मूक सहेली) शीर्षक कहानी इसका सुंदर उदाहरण है।भीम प्रधान को **बाल कोसेली** के लिए सन् 2018 का साहित्य अकादमी बाल पुरस्कार प्रदान किया गया।

10. कृष्णप्रसाद भट्टराई

कृष्णप्रसाद भट्टराई का जन्म शोणितपुर, असम में सन् 1961 में हुआ। उनकी माता का नाम कौशिला भट्टराई तथा पिता का नाम प्रेमलाल भट्टराई था। उन्होंने त्रिभुवन विश्वविद्यालय से नेपाली में एम. ए.। वे कलागुरु विष्णुप्रसाद राभा महाविद्यालय औराङ, बीटीएडी में नेपाली विषय के प्राध्यापक बने। बाल पुस्तकों के अलावा उनकी चार प्रौढ़ काव्य-रचनाएँ प्रकाशित हैं।

बाल साहित्य : **नानीहरूलाई मीठो कोशेली** (बाल कविता सं, 2020), **फूलबारी** (बालकविता सं. 2021)।

कृष्णप्रसाद की बाल कविताओं में बालोपयोगी विषयवस्तु का चुनाव, ललित शैली और सरल भाषा का प्रयोग है। पर्यावरण, दैनिक जीवन में प्रयोग आने वाली वस्तुओं, नैतिकता, अनुशासन्, विज्ञान के चमत्कार आदि को सरल-कोमल शब्दों में अभिव्यक्ति दी गई है।

11. साञ्झू लेप्चा

साञ्झू लेप्चा का जन्म सन् 962 में कालेबुङ में हुआ। वे लामित लेपचा तथा मारछिरिङ लेप्चा की पुत्री हैं। उन्होंने बी.ए. बीएड और त्रिभुवन विश्वविद्यालय से संबद्ध होकर शोध-कार्य किया। वे बनर्स वेग उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापिका बनीं। **पैंयु फुल्ने आशामा** (कथा संग्रह, 2007), **अव्यक्त कथा** (कथा संग्रह, 2010), **आकाशबेली** (उपन्यास, 2015) आदि उनकी प्रकाशित प्रौढ़ रचनाएँ हैं।

बाल साहित्य : **बन-संसार** (बाल उपन्यास, 2012), **मन मञ्जरी** (बाल कविता संग्रह, 2013)।

भारतीय नेपाली साहित्य में बाल उपन्यासों की नितांत कमी है। इस न्यूनता बोध के फलस्वरूप बन-संसार उपन्यास का जन्म हुआ। इसमें जंगल जीवन के माध्यम से रचनाकार ने मानवता की शिक्षा देने का प्रयास किया है। इसमें गिलहरी और बंदर मुख्य पात्र हैं। अन्य पात्र इनके इर्द-गिर्द घूमते हैं। इनमें मानवीय भावनाओं को आरोपित करके उपन्यास को रोचक और पठनीय बनाया गया है। सरल, सुगम एवं सहज नेपाली भाषा और शब्दावली, सरल वाक्यों का गठन आदि इस उपन्यास को बाल-बोधगम्य बनाता है।

12. शंकरदेव ढकाल

शंकरदेव ढकाल का जन्म 15 जुलाई 1962 को पूर्व सिक्किम की मध्य पान्डाम बस्ती में हुआ। उनकी माता लक्ष्मी माया तथा पिता शिवलाल ढकाल हैं। वे एक कुशल प्रशासक, कवि, निबंधकार, उपन्यासकार और बाल साहित्यकार हैं। वाणिज्य एवं मानविकी में स्नातक की डिग्री हासिल करके उन्होंने सिक्किम उच्च

न्यायालय में लेखापाल, सहप्रबंधक, सिक्किम लोकसेवा में सह आवासीय आयुक्त जैसे पदों पर सेवाएँ दीं। इसके बाद वे सिक्किम सरकार के सचिव बने।

बाल साहित्य के अलावा शंकरदेव ढकाल की खंड काव्य, उपन्यास, कविता, संस्मरण आदि विधाओं में पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनकी **बाल सुधार सागर** (बाल कथा संग्रह, 2012) प्रकाशित है। इस संग्रह के लिए उन्हें सन् 2016 का बाल साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा प्रौढ़ उपन्यास **किरायाको कोख** उपन्यास के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। प्राप्त हुआ था।

13. विष्णु शास्त्री

विष्णु शास्त्री का जन्म सन् 1964 में तेजपुर (शोणितपुर), असम में हुआ। उनकी माता का नाम पूर्णमाया देवी तथा पिता का नाम दुर्गाबहादुर सोडारी है। उन्होंने नेपाली साहित्य में स्नात्कोत्तर, संस्कृत में शास्त्री तथा हिंदी में प्रवीण परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने परिषद पत्र, स्वर्ण स्मृति, सुभाष जैसी पत्रिकाओं तथा गोर्खा स्मृति ग्रंथ का संपादन किया। वे नेपाली के साथ-साथ हिंदी और असमीया के रचनाकार भी हैं। बाल साहित्य से इतर उनकी कविता, कहानी, संस्मरण, प्रबंध जैसे क्षेत्र संबंधी रचनाएँ प्रकाशित हैं।

बाल साहित्य : **चितुवाको हजार गोठ** (बालकथा संग्रह, 2012), **चिँ मुसी चिँ** (बाल कविता संकलन, 2015), **हाउगुजी** (बाल कविता संकलन, 2016), **शहीद** (बाल नाटक, 2014), **मणिकुमारी** (बाल उपन्यास, 2017)।

इन रचनाओं में बोलोचित सरल से सरलतम नेपाली भाषा का प्रयोग किया गया है। भाव और प्रस्तुति सहज व सरल है। विष्णु शास्त्री को दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की ओर से डॉ. आंबेडकर फैलोशिप एवार्ड प्रदान किया गया। उन्हें नेहरू युवा केंद्र द्वारा जिला युवा नेता सम्मान से भी अलंकृत किया गया।

14. डॉ. दैवकीदेवी तिम्सिना

दैवकीदेवी तिम्सिना का जन्म सन् 1967 में रौता, मराधनश्री, असम में हुआ। उनकी माता यमुना देवी तथा पिता केवली प्रसाद हैं। नेपाली साहित्य में त्रिभुवन विश्वविद्यालय से पीएचडी हासिल करने के बाद वे सतिया महाविद्यालय के नेपाली विभाग में भाषा शिक्षिका के रूप कार्य करने लगीं। उन्होंने संस्कृति सुषमा तथा अमृतवल्ली तिहार स्मृति ग्रन्थ, टुपिया, शोणितपुर का संपादन किया। तिम्रो **स्थान कहाँ छ** (2010) उनका प्रकाशित कविता संकलन है।

बाल साहित्य : **घामपानी घामपानी स्यालको बिहे** (कविता संकलन, 2015), **दुष्ट राजकुमार** (कविता संकलन, 2021)।

शिशु साहित्य में योगदान के लिए उन्हें मितेरी स्वागत सम्मान से सम्मानित किया गया।

15. मीना सुब्बा

मीना सुब्बा का जन्म खरसाङ में सन् 1964 में हुआ। उनकी माता मंदरा सुब्बा तथा पिता पद्मध्वज सुब्बा है। वे लेखन से जुड़ीं और सिक्किम साहित्य परिषद की सहायक सचिव बनाई गईं। **स्पृहा** (कविता संग्रह, 2006), **अक्षर आलोक** (कविता संग्रह, 2017), **कोपिलाका रङहरू** (कविता संग्रह, 2018) आदि उनकी कृतियाँ हैं। बाल साहित्य में भी उनकी भूमिका है।

बाल साहित्य : **फूलबारी** (बाल कविता सं, 2012)।

मीना सुब्बा की कविताओं में बालसुलभ चेष्टाओं को सुंदर ढंग से उभारने का प्रयास किया गया है। बौद्धिक कोमलता से युक्त इन बाल कविताओं में नेपाली जन-जीवन से संबंधित बिंब, आध्यात्मिकता, संस्कृति के

विविध रंग, नीतिगत, व्यवहारिक शिक्षा, पारंपरिक गोर्खाली जीवन से संबंधित वस्तुएँ, मानवता, पर्यावरण रक्षा की शिक्षा, पारंपरिक औषधियों का ज्ञान आदि विषय हैं।

16. भविलाल लामिछाने

कविता साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले भविलाल लामिछाने ने भारतीय नेपाली बाल साहित्य के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बाल साहित्य : **बादल पारिको देश** (शिशु कविता सं. 2006), **चराको चिरबिर भुराको किरकिर** (बाल कविता संग्रह, 2018), **किसिङ्को कन्तविजोक** (अनूदित बालकथा सं, 1985)।

भविलाल लामिछाने को **चराको चिरबिर भुराको किरकिर** बाल कविता संग्रह के लिए के लिए 2019 में साहित्य अकादमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार प्रदान किया गया।

17. वेग वसन्त थापा

भारतीय नेपाली बाल साहित्य में निरंतर अपनी पहचान बनाने वाले वेग वसन्त थापा एक उत्साही रचनाकार हैं। डुवर्स के रचनाकारों में उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। सन् 2004 के बाद 2021 में एक साथ तीन बाल पुस्तकें प्रकाशित करके उन्होंने अपने बाल साहित्य प्रेम को उजागर किया।

बाल साहित्य : **पाठशालाको पहिलो दिन** (2004), **देश र फुच्चे** (2021**), हराएका रोल नम्बरहरू** (2021), **हनुमानको अनुमान** (2021)।

वेग वसन्त थापा की रचनाएँ सुललित शैली में रचित हैं। बालकों की मनोभावनाओं एवं बोधगम्यता का उन्होंने विशेष ध्यान रखा है। उनकी भाषा सरल और सहज है।

थमन नौवाग का **मनुष्यत्व** (बाल एकांकी संग्रह (2014),

अन्य रचनाएँ

तारानाथ सुवेदी रचित **बसन्त फेरि मुस्कायो** (2011), ज्योति शाक्य रचित **चिरिबिरि** (2001), बसन्ती शाह की **बालवाटिका** (2002), शिशुपाल शर्मा की **बालकविता कोशेली** (2006), **फक्रँदै छन् कोपिलाहरू** (2006, शिबु छेत्री की **अभियान** (2008, जीवन राणा रचित **मोनिका** (2010), शांति छेत्री कृत **हाम्रो फूलबारी** (2012) भीम प्रधान कृत **बाल कोशेली**, गंगाप्रसाद लिम्बू 'असफल' रचित **गंगा सुनसान** (2015), मञ्जू शर्मा - **कोशेली** (2015), रमा भंडारी-**सानुका कविता** (2020), डम्बर दाहाल-**गाउँदै जाऊँ सिक्दै जाऊँ** (2021) अन्य बाल कविता संग्रह, देवकुमारी थापा के **एकादशी, झझल्को, सेतो बिरालो**, रामचन्द्र गिरी कृत **साप र काग** (1993), डॉ.एडोन रोगोंग का **मायाका फूलहरू** (2006), कालूसिंह रनपहेंली कृत **कथाकुटिर** (2005), **यथार्थबोध** (2005**), प्रश्नचिह्न** (2011) अन्य बाल कथा संग्रह, गीता उपाध्याय रचित **आमा म फास्ट भएँ** (1977) सुवास दीपक कृत **अभिषेक** (1980), **कमालपुरको चमत्कार** (अनु.2003), अबीर खालिङ - **प्रतिशोध एउटा तिरस्कारको** (1982), अग्निबहादुर छेत्री रचित **किसिङ्को कन्तबिजोक** (1995) अन्य बाल उपन्यास, थमन नौवाग द्वारा रचित **मनुष्यत्व** (2013), मुक्ति उपाध्याय बराल द्वारा रचित **रहर** (2015) प्रकाशित बाल एकांकी संग्रह तथा मनबहादुर गुरुङ रचित **सुनकेशी रानी,** इन्द्रमनी दर्नाल रचित **मार्गदर्शन** (1998) रंगमंच पर मंचित बाल एकांकियाँ एवं नाटक हैं। **शिक्षा, हिमाल किशोर, बालवाणी, बाल दर्पण, हाम्रो नवपल्लव, बाल बर्घैंचा, फूलबारी** देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित बाल पत्रिकाएँ हैं।

निष्कर्ष

हमें यह ध्यान रखना होगा कि प्रारंभ में भारतीय नेपाली बाल साहित्य विद्यालयी आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से रचा गया। समय के साथ इसका एक स्वतंत्र साहित्य-विधा के रूप विकास हुआ। कलमकार के सामने शिशु, बाल और किशोर पीढ़ी के निर्माण का लक्ष्य मुख्य हो गया और वे सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा मानवी मूल्यों को केंद्र में रख कर बाल साहित्य की रचना करने लगे। कालांतर में साहित्य अकादमी जैसी संस्थाओं ने बाल रचनाओं को पुरस्कृत किए जाने की परंपरा प्रारंभ करके इस विधा को प्रोत्साहित किया। इसका प्रभाव भारतीय नेपाली बाल साहित्य पर भी पड़ा। तेजी से बदलते समय के साथ अब परंपरागत शब्द आधारित अभिव्यक्ति परंपरा पर्याप्त नहीं रही है। बालकों का तेजी के साथ प्रौद्योगिकी के साथ मैत्री-भाव स्थापित हो रहा है। इस दशा में रचनाकारों को सचित्र अभिव्यक्ति और मल्टिमिडिया केंद्रित अभिव्यक्ति के साथ समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है। आज का बालक छपा अक्षर पाठ पढ़ने से अधिक एनिमेटेड विडियो युक्त कहानियाँ, आवाज, संगीत एवं एनिमेटेड चित्रयुक्त कविताएँ सुनकर एवं देखकर ज्ञानार्जन करने में अधिक रुचि रखता है। शैक्षिक संस्थान भी भी इसी प्रकार की पाठ्य सामग्री निर्माण में लगे हैं। नेपाली में इस सामग्री के अभाव का सामना करता हुआ बालक अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भाषाओं में निर्मित अडियो विजुअल सामग्री की ओर झुकता दिखाई देता है। अतः भारतीय नेपाली में ऑडियो-विजुअल सामग्री की नितांत आवश्यकता है। इस दिशा में भारतीय नेपाली बाल रचनाकारों को विचार करने की आवश्यकता है।

सहायक संदर्भ स्रोत

1. नारी सर्जक -डॉ. गोमा देवी शर्मा, गोर्खा ज्योति प्रकाशन, प्रथम सं. 2024
2. भारतीय नेपाली बालसाहित्यमा नारी श्रष्टा- डा. कविता लामा, प्रथम सं. 2023
3. भारतेली नेपाली बाल साहित्य - मुक्ति बराल, 2021
4 भारतीय नेपाली बाल साहित्यिक पुस्तक-पत्रिकाहरूकामाथि समीक्षात्मक दृष्टिकोण- टीका ढुङ्गेल, 2017
5. भारतीय नेपाली साहित्यको विश्लेषणात्मक इतिहास - डा. गोमा देवी शर्मा, गोर्खा ज्योति प्रकाशन, 2018
6. मणिपुरमा नेपाली साहित्यः एक अध्ययन- डा. गोमा देवी शर्मा, गोर्खा ज्योति प्रकाशन, मणिपुर, 2016
7. साहित्य सन्धान - नवीन पौड्याल, नई इन्डिया प्रकाशन, सिलगढी, 2018
8. सिक्किमको नेपाली साहित्यिक इतिहास परम्पराः स्वरूप र प्रवृत्ति- दीपक तिवारी, श्रीमती रमा तिवारी, 2013